आया बसंत

सुधा चौधरी

आया बसंत
पहने पीत अनंत
सजकर धरती खड़ी हुई
देने को आनंद।

बसंत आया
पीत रंग भाया
आम्र मंजरिया हुई
मधु सरस लाया।

बसंत आया
कोयल बोले
मन मयूर
आज फिर डोले।

बसन्त आया
नवल पात ने
मन हर्षाया
खिलकर पीली नीली और गुलाबी रंगों ने
धरती को स्वर्ग बनाया।

बसन्त आया
निष्ठुर ठंडी ले जाने आया
तभी तो गुलाबी
मौसम कहलाया।

जहां रंग और रूप मिला

जहां रंग और रूप मिला
तुम खिलते बगिया मेरी
जहां प्रकाश में लिपटा हो
वह झिलमिल रतिया मेरी।

जहां कल्पना मिट जाये
मिलकर धन्य तुम्हीं से
उस साधारण पन में भी
असाधारण है बतिया तेरी।

मन के जिस कोने में बैठो
रोक तुम्ही को पाती हूं
तुम आंखो में दिखते हो
कहती हैं सखियां मेरी।

तुमको मैं पढ़ लेती हूं
तुम पढ़ते हो भाव मेरे
जब तक तुम हो जीवन में
जीवित हैं अखियां मेरी।

ISSN:2583-8849